THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212
Popular Article
April, 2025 Vol.5(4), 6816-6820

गायों एवं बैलों मैं होने वाला सिंग का कैंसर / हॉर्न कैन्सर

डॉ. हिरेन एम. बरोट[1], डॉ. भैरवी सौदागर[2]
[1]टीचिंग एसोसिएट, पशु चिकित्सा सर्जरी और रेडियोलॉजी विभाग, पशु चिकित्सा विज्ञान और पशुपालन कॉलेज, कामधेनु विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात
[2]पशु चिकित्सा सर्जन, टाटा ट्रस्ट small animal hospital, महालक्ष्मी, मुंबई, महाराष्ट्र
DOI:10.5281/ScienceWorld.15298707

प्रस्तावना

सिंग पशु के शरीर में सुंदरता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण अंग है। यह पशु की सुंदरता को बढ़ाता है। गाय और भैंसोंमें खास तौर पर सींगों की सुंदरता उसकी कीमत को बढाती है और उसकी नस्ल को बोध भी कराती है। कांकरेज और खिलरी नस्ल के बैल के सिंग उनकी नस्ल के लिए विशेषता का एक कारण है।सिंग पशुओं की सुंदरता बढ़ाते हैं, उसके विपरीत विभिन्न प्रकार की चोटों और बीमारियों के लिए उतने ही संवेदनशील होते हैं। सावधानी एवं समय पर हमें इसका उपचार जल्द से जल्द पशु डॉक्टर से करवाना चाहिए, नहीं तो इसका सीधा असर पशुओं की कीमत और उत्पादन पर होगा।

सिंग के कैंसर को अंग्रेजी भाषा में हॉर्न कैंसर कहा जाता है कैन्सर जो गायों एवं बैलों में पाए जाने वालाएक घातक (Malignant) कैंसर है। गुजरात और राजस्थान के कुछ भागों में इसे कमेडी, कंबोई और करमोड़ी भी कहा जाता है। यह कैन्सर सिंग के कोर के स्क्वैमस सेल परत (squamous cell lining) से उत्पन्न होता है। ज्यादातर सिंग का कैंसर पांच से दस वर्ष की उम्र वाले गाय व बैलों में पाया जाता है। एक अध्ययन के अनुसार सिंग का कैंसर ज़्यादातर देसी नस्ल की गाय एवं बेल जैसे कि कांकरेज (8.24%), गिर (7.33%), मालवी (6.99%), और खिलरी (2.96%) में पाया जाता है। सिंग का कैंसर मुख्य रूप से सफेद रंग की लंबे सिंग वाली गायों और बैलों में अधिक पाया जाता है। गुजरात की प्रसिद्ध नस्ल कांकरेज के सिंग लंबे और भारी होते हैं इसलिए यह बिमारी कांकरेज नस्ल में अधिकतर पाई जाती है।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 26/04/2025

हॉर्न कैन्सर से भारत के पशुपालकों का भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है और ये बिमारी हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व के कई अन्य देश जैसे कि ब्राज़ील, सुमात्रा और इराक में पायी जाती है। सिंग का कैंसर साँड (Bulls) की तुलना में खेती में काम करने बधियाकरण (castration) किये हुए बेलों (Bullocks) में ज्यादा पाया जाता है। ये बिमारी भैंसों की तुलना में गाय और बैलों में ज्यादा पाई जाती है।

सिंग का कैंसर होने के कारण

सिंग का कैंसर क्यों होता है इसकी सटीक और पुख्ता जानकारी अभी भी वैज्ञानिकों के पास नहीं है, लेकिन इसके लिए कई कारण हैं जिसकी वजह से ये रोग आपके पशुओं को होसकता है।

- **हार्मोन (Hormones) :** जब बछड़ों में उसका बधियाकरण (castration) कम उम्र में कराने के कारण टेस्टेस्टेरॉन नामक हार्मोन की कमी हो जाती है ओर इसी होर्मोन की कमी के कारण यह सिंग का कैंसर होता है, ऐसा माना जाता है।
- **सिंग के उपर रंग या पैंट करना :** कुछ त्योहारों में बैलों या गाय को सजाने के लिए सींगों को रंग या पैंट दिया जाता है। ये रंग में कुछ केमिकल होते हैं और ऐसे केमिकल्स से सिंग का कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है।
- **सिंग का क्रोनिक इरिटेशन :** कई बार कुछ पशुपालक सींगों को रस्सी बाँध देते है और ये रस्सी से सिंग को क्रोनिक इरिटेशन होता है।
- **सूर्य के प्रकाश द्वारा होता हुआ रेडिएशन :** बेल ज्यादातर खेतों में काम करता हे और उस समय सूर्य प्रकाश से आने वाली विशिष्ट प्रकार की किरण जिस में से रेडिएशन उत्पन्न होता है और उसमें भी जीस पशु की त्वचा त्वचा सफेद है उससे भी ये कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है
- **लड़ाई के दौरान सिंग पर चोट लगना, सिंग का टूटना, सिंग फ्रैक्चर होना :** कभी कभी दो पशु में लड़ाई होने पर सिंग पर चोट या फ्रैक्चर होता है। इन सब कारणों की वजह से ये सींगों के आसपास स्थित कोशिकाओं का प्रसार ऐक्टिव रूप में होता है और कुछ दिनों में यहाँ कैंसर का मांस तैयार हो जाता है। (तस्वीर 1)

तस्वीर 1 : इस तस्वीर में सिंग फ्रैक्चर होने के बाद सिंग का कैंसर हुआ देख सकते हैं

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 26/04/2025

- कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार यह कैन्सर विषाणुओं (Virus) की वजह से भी हो सकता है। जिसकी अभी तक सटीक और पुख्ता जानकारी नहीं है।
- आनुवंशिक
- लंबे और भारी वज़नदारसिंग

सिंग कैंसर के लक्षण और स्टेज

सिंग का कैंसर तीन चरण या तीन स्टेज में पाया जाता है और हर चरण और स्टेज में अलग अलग लक्षण पाए जाते हैं जो नीचे अनुसार है।

स्टेज (Stage) 1 :

- पशु का सिर हिलाना
- दर्द की वजह से पशु का सिंग को दीवार या खूंटों से रगड़ना।
- सिंग के अंदर कैंसर का मांस भर जाता है और सिंग नरम पड़ जाता है।
- कैंसर ग्रस्त सिंग की तरफ वाले स्किन गर्म लगती है और अगर यहाँ पर हाथ लगाते हैं तो पशु दर्दनाक महसूस करते हैं।

स्टेज (Stage) 2 :

- कैंसर ग्रस्त सिंग की तरफ सिर झुकाकर रखना। (तस्वीर 2)
- कैंसर ग्रस्त सिंग की तरफ वाले नाक में से रक्तमिश्रित स्राव का बहाना।
- कैंसर ग्रस्त सिंग को बजाकर देखने पर एक सुस्त आवाज़ आती है।

स्टेज (Stage) 3 :

- दर्द के कारण खाना बंद कर देना।
-
- काफी ज्यादा समय हो जाने पर सिंग काफी झुक जाता है और उस समय कैंसर का ग्रोथ भी काफी बढ़ गया होता है उससे सिंग पकड़ कर रखने वाली स्किन काफी पतली हो जाती है और फट जाती है और फटे हुए भाग से गोभी की तरह (cauliflower like growth) की कैंसर की गांठें दिखती है और वहाँ से काफी दुर्गंधयुक्त रक्तमिश्रित स्राव निकलता है।

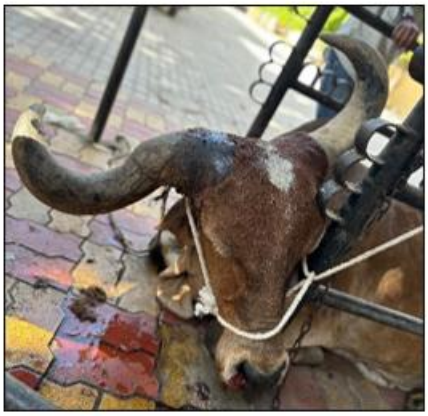

तस्वीर 2 : इस तस्वीर में गिर गाय का कैंसर ग्रस्त सिंग दाएँ तरफ झुक हुआ है

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 26/04/2025

- बाद में वहाँ पे घाव बन जाता है और वहाँ पे मक्खिया बैठती और कीड़े (maggots) पड़ जाते हैं और वहाँ से बदबू आने लगती है।
- अगर पशुमालिको द्वारा समय पर सारवार ना कराई जाए तो वो सिंग टूट के अलग हो जाता है।

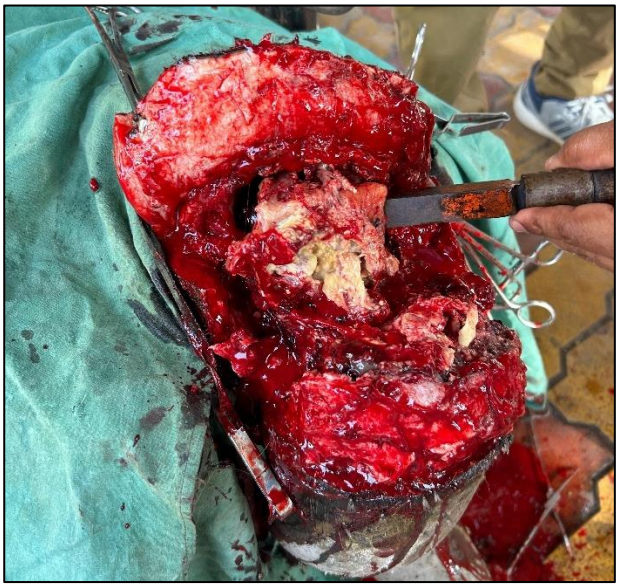

तस्वीर 3 : इस तस्वीर में पीले रंग का कैंसर का मांस दिख रहा है

सारवार

सर्वप्रथम आपके पशु डॉक्टर से आपको कैंसर ग्रस्त सिंग को फ्लैप (flap) या मॉडिफाइड फ्लैप मेथड (modified flap method) से अपने बेज यानी मूल से निकाल देना चाहिए जिसको amputation of horn बोलते हैं।

ऑपरेशन से पहले अपने पशु को 24 से 36 घंटे तक कुछ खाना या पानी नहीं देना चाहिए। पशु चिकित्सक ऑपरेशन के दौरान पशु को दर्द ना हो इसलिए cornual nerve block ब्लॉक करते है ताकि पशु को दर्द ना हो। बाद में पशु चिकित्सक सिंग के आजू बाजू में दो चीरा (incision) लगा के सिंग को आधार से काट लेता है और सिंग के गोभी की तरह (cauliflower like growth) (तस्वीर 3) की कैंसर की गांठें पूरी तरह बाहर निकलता है। इसके बाद घाव पर प्रतिदिन बीटाडिन की ड्रेसिंग करनी है और इस पर मक्खियाँ न बैठें इसके लिए स्प्रे करना भी जरूरी है। इसके अलावा 5 से 7 दिन तक एंटीबायोटिक्स और पेन किलर भी लगवाने है।

ऑपरेशन द्वारा कैंसर युक्त सिंग निकालने के बावजूद अंदर कुछ कैंसर की कोशिका बच जाती है और इस कोशिकाओं की वजह से कभी कभी थोड़े महिनों के बाद फिर से वहाँ कैंसर की गांठें दिखने लगती है।इसे रोकने के लिए पशु चिकित्सक कैंसर विरोधी (Antineoplastic) दवाई लगाते हैं।

गायों एवं बैलों को सिंग कैंसर से बचाने के कुछ उपाय

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 26/04/2025

- बहुत ही लंबे सिंग वाले बेलों में कम उम्र में सिंग निकाल देना चाहिए होगा ताकि आगे चलकर उनमें यह बिमारी ना हो।
- अगर किसी पशु का होन कैन्सर का पारिवारिक इतिहास है तो ऐसे पशु के सिंग कम उम्र में ऑपरेशन करके निकाल देने चाहिए।
- छोटे बछड़ों का बधियाकरण 1 साल से पहले नहीं कराना चाहिए। जिस से हम टेस्टस्टेरॉन नामक होर्मोन का असंतुलन अटका सकते हैं और इससे भविष्य में हॉर्न कैंसर होने का खतरा कम होता है ।
- बैलों को दोपहर के घने सूर्य प्रकाश के दौरान खेत उपयोग में नहीं लेना चाहिए। उसकी जगह हमें उसे सुबह जल्दी खेत उपयोग में लेना चाहिए जिससे हम सूर्य प्रकाश से पड़ती सीधे किरणें से उत्पन्न होते रेडिएशन से सिंग को बचा सकें और काम होने के बाद बेलों को छांव वाले जगह में बांधना चाहिए जहाँ सूर्य की सीधी किरणें उस के सिंग पर न पड़े।
- पशुओं को बांधने की जगह पर दो पशु के बीच में दूरी रखनी चाहिए ताकि वो एक दूसरे से लड़ाई ना करें और हम उससे सिंग पर होने वाली चोटों से गाय व बैलों को बचा सकें।
- पशुओं के सिंग को रस्सी बांधकर नहीं रखना चाहिए।
- पशुओं के सिंगको रंग या पैंट नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष

पशुमालिक को ऊपर बताए हुए लक्षण अपने पशुओं में दिखे तो तुरंत ही पशु चिकित्सक का संपर्क करना चाहिए ताकि पशु चिकित्सक उसका निदान करके तुरंत ही उसका शल्य-क्रिया उपचार कर सके। जिससे हम पशुओं की कीमत और उत्पादन पे पड़ते असर को कम कर सके या तो टाल सके। आपको बताते चलें की हॉर्न कैंसर का कोई चिकित्सक उपचार नहीं है, सिर्फ शल्य चिकित्सा ही करानी पड़ती है।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 26/04/2025